विशेष रिपोर्ट – 2014

मानवता व मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए

ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन के निरंतर बढ़ते कदम

सदियों गुलामी की पीड़ा झेलने के बाद 1947 में भारत को आजादी मिली। अंग्रेजों ने देश की अर्थव्यवस्था को जहां छिन्न–भिन्न कर दिया था वहीं सामाजिक ताने–बाने को भी तार–तार कर दिया था। भ्रष्टाचार जैसी बुराई भी परिष्कृत रूप से अंग्रेजों ने ही भारत को दी। आजादी के बाद 1950 में भारत गणतंत्र बन गया। अपना संविधान, अपना कानून होने के बाद देश ने स्वावलंबी होने की तरफ कदम बढ़ाया। ज्यों–ज्यों देश स्वावलंबन की तरफ बढ़ रहा था त्यों–त्यों सामाजिक असमानता, रूढ़िवादिता, शोषण जैसी बुराईयां भारत में चहुंओर पैर फैलाने लगीं। 1950 में बने संविधान के अनुसार नागरिकों को कई मूल अधिकार दिए गए परन्तु ये मूल अधिकार उन लोगों को नहीं मिल पाते थे जो शोषित, वंचित व पिछड़े थे। दबंगों की दबंगई से लोग त्रस्त हो रहे थे। लोगों को मानवाधिकारों के बारे में नहीं पता था। बंधुआ मजदूरी, बाल मजदूरी जैसी कुप्रथाएं भी समाज में जिन्दा थीं। पुलिस का चेहरा भी मानवीय नहीं था। ऐसे में लोगों की पीड़ा को कुछ लोगों ने समझा और यह महसूस किया कि देश में एक ऐसे संघ की आवश्यकता है जो मानवाधिकारों के संरक्षण व मानवता की रक्षा के लिए कार्य कर सके तथा गरीबों, शोषितों व वंचितों की आवाज उठा सके। इसको काफी शिद्दत से महसूस करने के बाद **ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन ('एहरा')** का गठन 1987 में किया गया। **'एहरा'** के गठन के पीछे कई बुद्धिजीवी व कर्मठ लोग शामिल रहे हैं, इनमें पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह से लेकर कई अन्य समाजसेवी शामिल हैं। 1989 में **'एहरा'** एक पंजीकृत संघ बना। **'एहरा'** ने जब अपनी यात्रा शुरू की, उस समय **'एहरा'** के पास संसाधन कम थे, धन की कमी थी। सीमित संसाधनों और अल्प धन के माध्यम से **'एहरा'** आगे बढ़ता रहा। इस दौरान 'एहरा' से कई कर्मठ व ऊर्जावान व्यक्ति जुड़े। उसी में से एक **एम.यू.दुआ जी** भी हैं जो बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के रहे हैं। अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण ही ये बचपन से ही कुछ विशेष करना चाहते थे। इनका मन आसानी से शांत नहीं होता था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा व इंटरमीडियट तक की पढ़ाई बिहार से पूरी की। इंटरमीडियम पास होने के बाद श्री एम.यू.दुआ के मन में देश और समाज के लिए कुछ करने की इच्छा जागृत हुई। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की और उसके बाद कुछ अलग करने के लिए उन्होंने दिल्ली का रुख किया। दिल्ली आने के बाद वे **ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन** का गठन किया और वर्ष 2000 आते–आते **'एहरा'** के अध्यक्ष पद का भार भी इनके ऊपर आ गया। अध्यक्ष के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए डॉ. एम.यू.दुआ ने **'एहरा'** को एक लंबी उड़ान देने में कामयाबी हासिल की। डॉ. एम.यू.दुआ के अध्यक्ष बनने के बाद भी पैसों का अभाव था। संसाधन सीमित थे और इसी कमी को दूर करने के लिए डॉ. एम.यू.दुआ ने अपनी पूरी ताकत लगा दी। उन्होंने **'एहरा'** से तमाम बुद्धिजीवियों को जोड़ा तथा 'एहरा' को देश व विदेश में फैलाने का काम किया। **ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन** की आज 500 इकाईयां हैं और 36000 सदस्य हैं। इसके लिए सबसे बड़ा योगदान डॉ. एम.यू. दुआ ने दिया है। आज देश का ऐसा कोई राज्य नहीं है जहां **'एहरा'** के कार्यकर्ता न हों। देश के कोने–कोने में 'एहरा' के कार्यकर्ता अपने मिशन में लगे हुए हैं। **'एहरा'** का मिशन है कि सबको जीने व बराबरी का हक़ मिले, सबके पास समान अधिकार हों। संयुक्त राष्ट्र द्वारा पास किए गए मानवाधिकारों के तीस अनुच्छेदों का निरंतर पालन हो। इसके लिए वे सदैव प्रत्यनशील रहते हैं। **'एहरा'** के समर्पित कार्यकर्ताओं ने मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए जो अलख जगाई है उसका परिणाम आज देखने को मिल रहा है कि लोग मानवाधिकारों के बारे में जानने लगे हैं।

डॉ. एम.यू.दुआ ने अध्यक्ष का पद संभालने के बाद 2001 में **'एहरा'** ह्यूमन राइट्स पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। इस पत्रिका के माध्यम से देश व विदेश के ज्वलंत विषयों को उठाकर जनता से रूबरू कराया तथा विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु प्रशासन का ध्यान आकृष्ट किया। इस पत्रिका के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न एजेंसियों और उनकी गतिविधियों एवं मानवाधिकारों से संबंधित सेमिनारों व क्रियाकलापों से जनता को अवगत कराया जाता रहा। इसके बाद **'एहरा'** ने अपनी वेबसाइट शुरू करके लोगों को अपनी गतिविधियों से परिचित कराया। 'एहरा' अधिक से अधिक संख्या में लोगों को अपने साथ जोड़ने के लिए सदैव तत्पर रहा है। आज भी **'एहरा'** उसी मिशन पर चल रहा है। डॉ. एम. यू. दुआ का मानना है कि एक दिन हम देश के प्रत्येक नागरिक को मानवाधिकारों के बारे में जागरूक करके ही रहेंगे तथा विभिन्न तरह की ज्यादतियों से लोगों को निजात दिलाएंगे। मानवाधिकारों के पालन व संरक्षण के बीच आने वाली तमाम अड़चनों को हम दूर करेंगे। इसी को लेकर **'एहरा'** के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. एम. यू. दुआ आगे बढ़ रहे हैं। बिहार के एक छोटे से गांव से निकलकर दिल्ली होते हुए फ्रांस के पेरिस एवं संयुक्त राष्ट्र की धरती न्यूर्याक पर डॉ. एम. यू. दुआ ने अपने

जारी....5 पर

विचारों से लोगों को प्रभावित किया है। मानवाधिकारों के प्रति पूर्ण निष्ठा होने के कारण इनका जीवन पूरी तरह से देश व समाज के लिए ही समर्पित हो चुका है।

विभिन्न कार्यकर्ताओं और संचार माध्यमों से देश के बारे में जानकारी हासिल करते रहने के बावजूद डॉ. एम. यू. दुआ का मन शांत नहीं हुआ। देश के विभिन्न क्षेत्रों (शहरों की चमकती सड़कों से लेकर गांव की धूल–धूसरित पगडंडियों तक) स्वयं जाकर सच्चाई से रूबरू होना चाहते थे, इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने वर्ष 2004 में पहली बार 70 दिवसीय यात्रा का आयोजन किया। **ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन** के अध्यक्ष डॉ. एम. यू. दुआ के नेतृत्व में यह यात्रा दिल्ली के राजघाट से शुरू हुई। इस यात्रा में तमाम लोग शामिल हुए। देश के सभी प्रांतों से यह यात्रा गुजरी। इस यात्रा के दौरान **'एहरा'** के कार्यकर्ता देश की सच्ची तस्वीर से रूबरू हुए और तमाम समस्याओं को समझा। विभिन्न क्षेत्रों में तमाम तरह की संस्कृतियों को देखने के साथ–साथ विभिन्न बुराईयों को भी **'एहरा'** के कार्यकर्ताओं ने महसूस किया। कार्यकर्ताओं के साथ टीम को लीड कर रहे डॉ. एम. यू. दुआ ने शिद्दत से महसूस किया कि देश में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। यात्रा पूरी होने के बाद **'एहरा'** के कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि हम देश के जन–जन को मानवाधिकारों से परिचित कराएंगे तथा सभी नागरिकों को उनके मानवाधिकारों से परिचित कराने के साथ–साथ समाधान के लिये गंभीर प्रयास करेंगे। उसी से प्रभावित होकर '**एहरा**' के राष्ट्रीय कार्यालय से तमाम तरह के कल्याणकारी कार्य शुरू किए गए। जैसे जाड़े के दिनों में गरीबों को कंबल बांटना, रजाईयां बांटना, चौराहों पर अलाव जलवाना शामिल था। इसके साथ ही गर्मियों के दिनों में जब पेयजल की किल्लत हो जाती है तब विभिन्न जगहों पर प्याऊ लगवाना शामिल है तथा बरसात के दिनों में गरीबों के लिए शैल्टर बनवाने का काम भी किया गया। इसके साथ ही '**एहरा**' द्वारा उत्तरी दिल्ली में गरीब बच्चों के लिए एक स्कूल भी खोला गया। राष्ट्रीय कार्यालय में **दिल्ली विधिक सेवाएं प्राधिकरण** के सहयोग से निशुल्क कानूनी सहायता एवं पारिवारिक परामर्श केन्द्र खोला गया। इस केन्द्र के माध्यम से हजारों लोगों को निशुल्क कानूनी सहायता प्रदान की गई तथा उनकी पारिवारिक समस्याएं दूर की गई।

ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन प्रायः हर वर्ष मानवाधिकार दिवस के दिन कार्यक्रम का आयोजन करती है। ये आयोजन दिल्ली के साथ–साथ विभिन्न शहरों में होते हैं। **ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन** देश के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को पुरस्कृत कर चुकी है। इनमें कुछ प्रमुख लोगों का नाम हम यहां दे रहे हैं। **हिज एक्सलेंसी डॉ. खालिद अल शेख अम्बेसडर, स्टेट ऑफ फलस्तीन, हिज एक्सलेंसी मिस्टर सलाह अल मुख्तार अम्बेसडर ऑफ रिपब्लिक इराक, पूर्व मुख्य न्यायाधीश(इंडिया) ऑनरेबल जस्टिस स्व. श्री रंगनाथ मिश्र, डॉ. अशोक कुमार वालिया पूर्व मंत्री दिल्ली सरकार, मिस्टर फ्योडर स्टारसेविक (भूतपूर्व डायरेक्टर, यू.एन.आई.सी.), श्रीमती शालिनी दिवान (तत्कालीन डायेक्टर यू.एन.आई.सी.) डॉ. एम.एल.सहारे (पूर्व यू.पी.एस.सी. चेयरमैन) डॉ. आर.बी.आई., पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस, श्री पी.एन. भगवती, पूर्व न्यायधीश श्री ए.एस.कुरैशी, डॉ. एम.एल. सिंघवी (प्रख्यात समाज सेवी एवम् एम.पी.), श्री जोगिंदर सिंह (पूर्व निदेशक सी.बी.आई.), हिज एक्सीलेंसी श्री महमूद अब्दुल हलीम मोहम्मद (तत्कालीन अम्बेसडर सूडान), श्री उमेश लखनपाल पत्रकार, रोहित यादव पत्रकार, श्री महाराजा भानुप्रकाश सिंह (पूर्व गवर्नर), जगदगुरू शंकराचार्य, डॉ. हक जहांमून (जापान), मिस्टर एन, एस तनवर (रिटायर्ड आई.ए.एस.) श्री आर ए. राजीव (आई.ए.एस), श्री विपिन विहारी (आईपीएस), बॉलीवुड अभिनेत्री व भोजपुरी फिल्मों की सुपरस्टार नगमा, डॉ. खालिद एन अहमद (सर्जन), श्री राजीव रंजन (आई.पी.एस.), श्री रोमेश भंडारी पूर्व गवर्नर व राजदूत, श्री यू.एस. मिश्रा (पूर्व निदेशक सीबीआई), पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस स्व. श्री आर. एस. पाठक, श्री प्रदीप शर्मा (पुलिस अधिकारी), श्री मधुर भंडारकर फिल्म निदेशक, श्री संदीप मारवाह(फिल्म निर्माता, निदेशक एवं प्रमुख मारवाह स्टूडियो), स्वतत्रंता संग्राम सेनानी, चौधरी श्री रणवीर सिंह, महाशय धर्मपाल (एमडीएच ग्रुप), दलेर मेहंदी (गायक), डॉ. कार्तिकेयन (पूर्व सीबीआई डायरेक्टर), श्री टी.के.चौधरी (पूर्व डीजी), दादी चक्रधारी (ब्रह्माकुमारी), अरूणा सिंह पुलिस अधिकारी, डा. बिन्देश्वर पाठक प्रख्यात समाज सेवक (संचालक सुलभ इंटरनेशनल), सानिया मिर्जा (टेनिस खिलाड़ी), श्री चंकी पांडे (फिल्म अभिनेता), पूनम ढिल्लन (फिल्म अभिनेत्री), श्री किशोर ढींगरा (फिल्म प्रोड्यूसर), मिस नौसिन अली सरदार (टी.वी.कलाकार), मिस तसनीम शेख (टी.वी. अभिनेत्री), श्री कमाल खान (अभिनेता), रजत टोकस (टी.वी.अभिनेता), श्री खय्याली सहारन (लाफ्टर कलाकार), मिस शिल्पी शर्मा (फिल्म अभिनेत्री), दादी संतोष (ब्रह्माकुमारी), श्री रामदास अठावले (अध्यक्ष आर.पी.आई.) श्री अनिल शर्मा (फिल्म प्रोड्यूसर एवं डायरेक्टर), सूफी रफीक वारसी, श्री आदित्य पंचोली (फिल्म अभिनेता), भाई रामलखन (ब्रह्माकुमारी), श्री एहसान कुरैशी (टी.वी. कलाकार), श्री माला विजय प्रसाद, डॉ. मूफी लाखडवाला (सर्जन), श्री योगेश पटेल (शिक्षा विशेषज्ञ), श्री डीनो**

जारी....6 पर

मोरिया (अभिनेता), श्री देवांग पटेल (टी.वी.कलाकार), मिस जानवी छेड़ा (टी.वी.कालाकार), मिस अम्रपाली (टी.वी. कलाकार), मिस भैरवी गोस्वामी, (अभिनेत्री), मिस सौम्या चौधरी (सिंगर), श्री रजत बेदी (फिल्म अभिनेता), श्री संजय दत्त (सुपरस्टार) , प्रो. लक्ष्मीकांत चावला (तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री, पंजाब), दीतिन दीप ब्लागगन (आईपीएस) श्री कुंवर विजय प्रताप सिंह (आईपीएस) , डॉ. पी.जे. सुधाकर (आईआईएस), न्यायाधीश श्री जी. एल. गुप्ता (लोकायुक्त राजस्थान सरकार), मिस मोनिका पोर्टर (शिक्षा विशेषज्ञ, ब्रह्माकुमारी), श्री पी.वी. चतुर्वेदी स्वामी (प्रेसीडेंट, रामानुजम ट्रस्ट), जस्टिस एन.एल. टिब्रेवाल (भूतपूर्व गवर्नर राजस्थान), पद्म विभूषन डॉ.डी.आर.मेहता, श्री श्रेयश तलपड़े (फिल्म अभिनेता), मिस रितुपर्णा सेन गुप्ता, (अभिनेत्री), श्री छिवयंका त्रिपाठी (टी.वी. कलाकार) एवं अन्य महान हस्तियों को ''एहरा'' ने सम्मानित किया। यह क्रम अभी भी जारी है।

डॉ. एम. यू. दुआ एक समाजसेवी हैं। मानवता के प्रति समर्पित होने के नाते वे दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. मंडेला से काफी प्रभावित हैं। डॉ. एम. यू. दुआ का मानना है कि स्व. डॉ. मंडेला से उन्हें काफी कुछ करने की प्रेरणा मिलती है और उनका साहस बढ़ता है। इसके साथ ही आजादी के दीवाने भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव व चन्द्र शेखर आजाद से भी **'एहरा'** के कार्यकर्ता प्रेरणा लेते हैं। **'एहरा'** समय–समय पर देश के विभिन्न हिस्सों में जागरूकता शिविरों का आयोजन करती रहती है। स्लम एरिया में 'एहरा' विशेष ध्यान देती है। **'एहरा'** के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. एम.यू.दुआ का कहना है कि एक दिन 'एहरा' देश के 6 लाख गांवों तक पहुंचेगी और सबके दुखों को बांटेगी तथा हर व्यक्ति को मानवाधिकारों से परिचित कराएगी। पंडित नेहरू के कथन **भारत की सेवा का मतलब है लाखों दीन–हीनों की सेवा** से 'एहरा' के लोग काफी प्रभावित हैं। देश में व्याप्त तमाम विसंगतियों को दूर करने का बीड़ा भी **'एहरा**' ने उठा लिया है। 'एहरा' के कार्यों और क्रियाकलापों की सर्वत्र सराहना भी हुई। यात्रा के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ की एजेंसियों से भी यथोचित सहायता मिली। साथ ही देश के विभिन्न राज्यों में, विभिन्न जिलों में जहां राज्य सरकारों द्वारा सहायता मिली वहीं केन्द्र सरकार ने भी यथायोग्य सहयोग दिया। वर्ष 2006 में 'एहरा' ने 202 द्विवसीय यात्रा का आयोजन किया। जो देश के 34 राज्यों से होकर गुजरी तथा सार्क के कुछ देशों पाकिस्तान, नेपाल, भूटान व मालदीव में भी 'एहरा' के कार्यकर्ताओं ने जाकर मानवाधिकारों की अलख जगाई।

'एहरा' की अपनी तीसरी यात्रा वर्ष 2013 में शुरू हुई जो 224 दिनों में सम्पन्न हुई। 'एहरा' की यह यात्रा विभिन्न राज्यों के शहरों व गांवों से होकर गुजरी। इस दौरान 'एहरा' के कार्यकर्ताओं को कई खट्ठे–मीठे अनुभव हुए। इसी यात्रा में मजदूरों, किसानों के साथ–साथ विद्यार्थियों, सरकारी कर्मियों, अधिकारियों, छोटे–बड़े नेताओं, छोटे–बड़े उद्योगपतियों से भी मुलाकात हुई। देश में तरक्की का एहसास तो हुआ परन्तु इस तरक्की का लाभ सबको आज भी नहीं मिल पाया है। इसे 'एहरा' ने महसूस किया। देश में किसान आत्महत्या कर रहे हैं तो मजदूर बदहाल हैं। पाश्चात्य देशों तथा एशिया के कुछ सम्पन्न देशों के मुकाबले भारत में कृषि क्षेत्र काफी कमजोर है इसकी बानगी भी यात्रा के दौरान देखने को मिली। अभी भी देश के बहुत सारे किसान न तो उन्नतशील बीजों से परिचित हैं, न ही विभिन्न तरह के कीटनाशकों की जानकारी उन्हें है। उन्हें विभिन्न उर्वरकों के प्रयोग की मात्रा का भी पूरी तरह से ज्ञान नहीं है। कृषि क्षेत्र को संवारने के लिए तमाम बातें हुईं परन्तु आज भी कृषि क्षेत्र बदहाल है। कृषि क्षेत्र के बदहाल होने की वजह से ग्रामीण क्षेत्रों का चेहरा अभी भी मुरझाया हुआ है। अभी भी गर्मियों में मवेशियों को पीने के लिए जल नहीं मिलता तथा मनुष्यों को जल के लिए काफी दूर जाना पड़ता है। लोग साफ–सफाई का भी पूरी तरह से ध्यान नहीं रख पा रहे हैं। अभी भी देश में तमाम तरह की कुरीतियां जिंदा हैं। महिलाओं को अधिकार नहीं मिला है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं प्रताड़ित की जाती हैं। आज भी पुरूषों की पूजा करने के लिए वे मजबूर हैं। चुनाव के वक्त देश के विभिन्न क्षेत्रों में लोग जाति व समूह के नाम पर बंट कर आज भी वोट देते हैं। छोटे शहरों और कस्बों के बाजारों में रोजमर्रा इस्तेमाल की जाने वाली चीजों के नकली उत्पादों की भरमार है। कानून व्यवस्था की स्थिति ठीक नहीं है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में आतंकवादी पांव पसारने लगे हैं। देश की सड़कें जरूर चौड़ी हो गईं, ऊंची–ऊंची इमारतें बन गईं, विद्युतीकरण से गांव और शहर दोनों चमक रहे हैं पर कुछ क्षेत्रों में अभी भी पानी की कमी है, अच्छी सड़कों का अभाव है, न तो अच्छे अस्पताल हैं और न ही अच्छे स्कूल। देश का विकास चहुंमुखी नहीं हो रहा है। विकास का लाभ कुछ लोग ही ले रहे हैं। जनता महंगाई से त्रस्त है। मंडियों में बिचौलियों की तूती बोलती है। आवश्यक चीजों को अक्सर जमा करके उनके दाम बढ़ा दिए जाते हैं, बाद में दाम बढ़ने पर वस्तुओं को बाहर निकालकर व्यापारी बेचकर दोगुना–चौगुना लाभ कमाते हैं। स्कूल व कॉलेज जाने वाली लड़कियों से लेकर कार्यालयों में काम करने वाली महिलाएं असुरक्षित हैं। दबंगों की दबंगई पर कोई लगाम नहीं है। कुछ राज्यों में स्थिति तो बद से बदतर हो चुकी है। यात्रा के दौरान हुए अनुभवों के आधार पर 'एहरा' के सदस्यों ने देश में व्याप्त बुराईयों से लड़ने का संकल्प और गहरा कर दिया है साथ ही 'एहरा' के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एम. यू. दुआ ने भी विभिन्न तरह की कुरीतियों, बुराईयों और अव्यवस्थाओं को समाप्त करने के लिए 'एहरा' के कार्यकर्ताओं को मन व प्राण से देश व समाज के लिए काम करने का

जारी...7 पर

मंत्र दिया है। डॉ. एम. यू. दुआ ने भी यह महसूस किया कि अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। 'एहरा' ने देश की तमाम समस्याओं के समाधान के लिए 37 सूत्रीय मांग पत्र भी देश के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व लोकसभा अध्यक्ष के पास भेजा है। इस संबंध में 'एहरा' ने स्मरण पत्र भी दिया है।

जनहित में एहरा का मांगपत्र :

1. मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता व उसकी हर संभव रक्षा हो।
2. संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों व यूनाइटेड नेशन यूनिवर्सल डिक्लेरेशन का सम्मान हो।
3. समाज सुधारकों / मानवाधिकार कार्यकर्त्ताओं को पूरा सम्मान मिले।
4. राजनीति का उद्देश्य समाजहित व देशहित हो।
5. एकता, अखंडता, समानता व सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा मिले।
6. न्याय में भेदभाव बंद हो।
7. कानूनी प्रक्रिया व सभी जांच एजेंसियों के कार्यों में पारदर्शिता हो।
8. सभी मानव समान हैं अतः वी.आई.पी. व्यवस्था खत्म हो।
9. हमारा देश नशा मुक्त व अपराध मुक्त हो।
10. कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़े, व कृषि को उद्योग का दर्जा मिले।
11. सुरक्षा की गारंटी सभी को हो।
12. भ्रष्टाचार पर रोक हेतु सरकारी क्षेत्र में कार्य निष्पादन हेतु एकल खिड़की (Single Window System) व्यवस्था हो।
13. मजदूरों की समस्याओं पर ध्यान दिया जाए तथा तत्काल समाधान की व्यवस्था हो।
14. ग्रामीण विकास व शहरी विकास में समानता हो तथा ग्रामीण क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार हो।
15. रोटी,कपड़ा, मकान, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं में समानता हो।
16. महिला सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान हो।
17. बच्चियों को 12वीं तक शिक्षा मुफ्त हो।
18. छोटे उद्यमियों को हर संभव सहायता दी जाए।
19. सभी प्राधिकरणों व पुलिस स्टेशनों पर मानवाधिकार कार्यकर्त्ताओं को प्रतिनिधित्व मिले।
20. सभी कल्याणकारी योजनाओं व कार्यों को राजनीति से दूर रखा जाए।
21. सभी प्राधिकरण (Authority) स्वतंत्र व दबावहीन हो।
22. युवा–विकास हेतु काउंसलिंग व सहायता केन्द्र हो।
23. सिक्योरिटी प्राधिकरण (Authority) को ईमानदार, विश्वसनीय व चुस्त–दुरूस्त रखने के लिए काम का बोझ कम किया जाए।
24. मीडिया को सभी योजनाओं के प्रचार–प्रसार एवं जनता को जागरूक करने पर सम्मान मिले।
25. मानवाधिकार कार्यकर्त्ताओं को कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं विधायिका सभी में बराबर की भागीदारी मिले।
26. वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था में आमूल–चूल बदलाव हो।
27. आम बोल–चाल की भाषा राष्ट्र भाषा घोषित हो।
28. एक पहचान, एक भारतीयता जात स्थापित हो।
29. काला धन देश से बाहर न जाये इसके लिए भारत में स्विस बैंक की तर्ज पर एक बैंक की स्थापना की जाए।
30. मानवाधिकार कार्यकर्ता को सभी यात्रा पर रियायत दी जाये एवं टोल टैक्स मुफ्त हो।
31. मानवाधिकार कार्यकर्त्ताओं का स्वास्थ्य इंश्योरेंस मुफ्त हो।
32. मानवाधिकारों की जागरूकता के लिए विशेष कोष की स्थापना हो।
33. युवाओं को रोजगार की गारंटी हो।
34. फिल्मों / चैनल्स में अश्लीलता व हिंसा पर रोक हो।
35. ग्राम पंचायत, नगरपालिका, जिला पंचायतों, विधानसभाओं व संसद में मानवाधिकारों को बढ़ावा देने हेतु कार्य किये जाएं।

जारी....8 पर

36. भारत में मानवाधिकार विश्व विद्यालय अलग से हो।

37. राज्य स्तर पर विधान परिषद में व केन्द्रीय स्तर पर राज्य सभा में मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का मनोनयन हो।

उक्त मांगपत्र में जो मांगे हैं वे सभी जनता से संबंधित हैं। यदि इन मांगों पर गंभीरतापूर्वक सरकार विचार करती है और उन पर अमल करती है तो इससे देश व समाज का भला होगा।

इसके पूर्व 'एहरा' ने एक भाषा, एक कानून जैसी मांगों को लेकर लगभग तीन वर्ष तक जंतर–मंतर पर धरना दिया था और इस संबंध में भी देश के तत्कालीन राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के साथ–साथ विभिन्न मंत्रियों व वरिष्ठ अधिकारियों को मांग पत्र दिया जा चुका है। उस पर भी अभी तक कुछ अमल नहीं हुआ। 'एहरा' इस पर भी अभी भी कायम है और वह चाहती है कि उनके दोनों मांग पत्रों पर विचार हो। डॉ. एम. यू. दुआ का कहना है कि अगर देश एक है तो कानून भी सभी के लिए एक होना चाहिए, सबकी भाषा एक होनी चाहिए और सबको अधिकार भी समान मिलना चाहिए। कहने को तो हमें तमाम तरह के अधिकार प्राप्त हैं पर हकीकत में ऐसा है नहीं। ऊंचे पदों पर रहने वाले लोगों को अपराध के बाद वह सजा नहीं मिलती जो एक आम आदमी को मिलती है। 100 रूपये की चोरी करने वाला व्यक्ति बरसों जेल में बिता देता है और लाखों–करोड़ों की हेरा–फेरी करने वाले आसानी से बच निकलते हैं। इस संबंध में भी देश के हुक्मरानों को सोचना चाहिए और कानून में इस तरह के नियम बनाने चाहिए ताकि सही मायने में समानता दिखे।

'एहरा' सामाजिक दायित्व को निभाते हुए अपने छोटे से संसाधनों से राष्ट्र को जोड़ने व सबल बनाने में दिन–प्रतिदिन चिन्तित रहा है इसने भारत के हर एक भू–भाग को देखा व समझा है। जाति, धर्म, भाषा, रंग से ऊपर उठकर सभी को एक माला में पिरोने का काम किया है। भेदभाव मिटाना 'एहरा' की प्राथमिकता रही है। जहां कहीं भी मानव अधिकार का हनन देखा वहां 'एहरा' ने बिना किसी प्रचार के अपने को आगे रखकर लोगों को उनका हक दिलाने के लिये काम किया। हर तरफ धर्म की लड़ाई, जाति व समाज की लड़ाई, ऊंच–नीच एवं छुआछूत की लड़ाई है। हमें सबसे पहले एक राष्ट्र की अनिवार्यता, सभी भाषाओं को एक पुल बनाकर एक राष्ट्र भषा की अनिवार्यता, सर्वहारा वर्ग एवं समानता को प्रतिस्थापित करने के लिए एक कानून की अनिवार्यता एवं एक राष्ट्रीय पहचान की अनिवार्यता को कठोरता के साथ राष्ट्रहित में लागू करवाने के लिए प्रयास करना होगा।

आज आर्थिक रूप से सुदृढ़ लोग शिक्षा के नाम दुकानदारी चला रहे हैं, स्वास्थ्य के नाम दुकानदारी चला रहे हैं एवं संस्कृति की रक्षा के नाम दुकानदारी चला रहे हैं।

आज आवश्यकता है बुद्धिजीवियों, नवयुवकों एवं मानवता के पक्षधर लोगों की जो राष्ट्र की आन–बान–शान में आगे बढ़कर दो–दो हाथ राष्ट्र विरोधियों से करें। समाज में भ्रष्टाचार, शोषण, दोहन एवं उत्पीड़न के विरूद्ध एकसुर में आवाज उठाने की जरूरत है। 'एहरा' के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. एम. यू. दुआ ने अपने कुशल निर्देशन में 'एहरा' को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खास पहचान दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। **इकोसोक (संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक परिषद)** के दो सम्मेलन में डॉ. दुआ शिरकत कर चुके हैं। 2008 में पेरिस में आयोजित इकोसोक के सम्मेलन में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एम. यू. दुआ ने शिरकत करते हुए 'एहरा' को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर और प्रतिष्ठा दिलवाने का प्रयास किया तथा वर्ष 2013 में संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में संपन्न हुए सम्मेलन में डॉ. एम. यू. दुआ ने शिरकत की थी। इस अवसर पर उन्होंने इस सम्मेलन में भाग लेने आए दुनिया भर के देशों के तमाम प्रतिनिधियों से विचारों का आदान–प्रदान किया और 'एहरा' को दुनिया के कोने–कोने में फैलाने का संकल्प लेकर दिल्ली लौटे। अपने न्यूर्याक प्रवास के दौरान डॉ. एम.यू. दुआ ने विदेशों में 'एहरा' चैप्टर खोलने के अपने मंसूबे को अंजाम दिया और तमाम लोगों को 'एहरा' से जोड़ा। आज ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन अंतर्राष्ट्रीय स्तर का संगठन बन चुका है और इसके अध्यक्ष डॉ. एम.यू.दुआ अमेरिकन बार एसोसिएशन, इंटरनेशनल बार एसोसिएशन के भी सदस्य हैं तथा देश की कई विभिन्न संस्थाओं का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

डॉ. एम.यू.दुआ एक दूरदर्शी और विचारशील पुरूष हैं। इन्होंने महसूस किया कि आगे चलकर हमें आवश्यक मांगों को मनवाने में यदि सफलता नहीं मिलती है तो हम चुप नहीं बैठेंगे और उन्होंने बहुत सोचने–विचारने के बाद एहरा नेशनल पार्टी का गठन भी किया। एहरा नेशनल पार्टी गठित करने के बाद उन्होंने यह संकेत दे दिया है कि यदि जनहित की हमारी मांगों को नहीं माना गया तो हम आगे राजनीति में कूदकर भी अपनी मांगों को मनवा सकते हैं। हालांकि डॉ. एम.यू. दुआ तात्कालिक तौर पर राजनीति से दूर रहने का मन बना चुके हैं। वे दीन–दुखियों, शोषितों, वंचितों की सेवा और समाज के हित के लिए समर्पित रहने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहे हैं। डॉ. एम. यू. दुआ का कहना है कि अभी हमारा संकल्प पूरा नहीं हुआ है, अभी हमारे कदम आगे बढ़ रहे हैं, हमारी चाल तेज हो गई है। हमारे साथ चलने वालों की संख्या बढ़ चुकी है। हमारे अंदर जोश की भावना और प्रबल हो गई है। हमारे विचार और स्पष्ट हो चुके हैं, पर अभी मंजिल नहीं मिली है। डॉ. दुआ का कहना है कि जब तक देश के हर दुखी व्यक्ति के दुख को दूर नहीं

जारी...9 पर

किया गया, सबको समान अधिकार नहीं मिले, मानवाधिकारों से सभी परिचित नहीं हुए तब तक हमारा मिशन अधूरा है। वे अपने मिशन को पूरा करने के लिए हर स्तर पर, हर क्षेत्र में प्रयास कर रहे हैं। इसी कड़ी में 'एहरा' का अगला कदम **एहरा एडवोकेट एसोसिएट्स (AAA), एहरा जर्नलिस्ट एसोसिएट्स (AJA)** का गठन करना है।

ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन के पास अधिवक्ताओं (वकीलों) की एक लम्बी–चौड़ी फौज है तथा इस संघ से तमाम पत्रकार भी जुड़े हैं। ऐसे में लोगों को सस्ता और त्वरित न्याय सुलभ कराने के लिए एहरा एडवोकेट एसोसिएट्स बनाने का संकल्प लिया है। यह एसोसिएट्स हर तरह के मुकदमों को लड़ेगा, खासकर मध्यम वर्गीय और निम्न वर्गीय मुकदमों को लड़ने में ज्यादा प्रतिबद्धता दिखलाएगा। चाहे वे सिविल के केस हों, या अपराधिक केस। जिनसे आम आदमी की सहायता हो, उनकी मुश्किलें हल हों, उन मुकदमों को लड़ने में 'एहरा' सबसे आगे रहेगा। कम फीस दर पर मुकदमें लड़े जाएंगे। कुछ गरीब लोगों के मुकदमें निशुल्क भी लड़े जाएंगे। 'एहरा' का मकसद पैसा कमाना नहीं है, 'एहरा' का मकसद सामाजिक न्याय के लिए लड़ना और अपने हितों को नुकसान पहुंचाकर दूसरों का हित करना है। इसी तरीके से एहरा जर्नलिस्ट एसोसिएट्स भी जनसेवा के लिए काम करेगी। 'एहरा' से जुड़े पत्रकार इसके सदस्य होंगे और इन सबके लिए एक मानक तय किया जाएगा। इससे जुड़ने वाले पत्रकार मानकों के हिसाब से कार्य करेंगे। हमारा मकसद है कि पूरे देश में फैले 'एहरा' से जुड़े पत्रकारों के माध्यम से जमीनी हकीकत को जानना। जमीनी हकीकत को जान लेने के बाद कुछ ज्वलंत विषयों को 'एहरा' अपने मंच से उठाएगी और उन मुद्दों के समाधान के लिए संघर्ष करेगी। 'एहरा से जुड़ने वाले नए पत्रकारों को प्रशिक्षण भी दिया जाएगा और उनके लिए एक गाइडलाइन भी तैयार की जाएगी। आज हमारे देश में तमाम ऐसे मसले हैं जिनको पूरी शिद्दत से उठाने की जरूरत है। आधुनिक युग में राजनीति, ग्लैमर, व्यापार जगत, फिल्म, टेलीविजन के अलावा कुछ जानी–मानी हस्तियों के बारे में ज्यादा रिपोर्टिंग होती है। दूर–दराज के क्षेत्रों में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए पूरा फोकस नहीं किया जाता। हमारे देश में आज भी किसी न किसी रूप में बाल विवाह जारी है, महिलाओं का शोषण हो रहा है, बाल मजदूरी भी कराई जाती है, तमाम खतरनाक उद्योगों में बच्चों से काम लिया जाता है। मजदूरों को मजदूरी कम दी जाती है, किसानों के साथ अन्याय होता है। देश के कई भागों में गन्ना किसानों को उनके गन्ने का मूल्य सही समय पर नहीं मिल पाता तथा तमाम जगहों पर दबंग आज भी विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं में बंदर–बांट करके सरकारी धन की लूट करते हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना में भी कुछ विसंगतियां मौजूद हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के तमाम स्कूलों में बैठने के लिए बच्चों के पास कुर्सी–मेज नहीं है। साफ–सफाई नहीं है। अस्पतालों से दवाई बेच दी जाती है। इन सब तमाम विषयों पर देश भर के समाचार पत्र और न्यूज चैनल थोड़ी बहुत खबरें दिखा कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेते हैं। इससे प्रशासन पर इसका असर नहीं पड़ता, न ही गलत काम करने वाले लोगों पर असर पड़ पाता है।

'एहरा' जर्नलिस्ट एसोसिएट्स के पत्रकार उक्त तमाम विषयों को विस्तृत रूप से उठाएंगे। एक–एक परत को उधेड़ेंगे और छोटे–बड़े सभी लोगों को बेनकाब करेंगे। यदि प्रशासन के लोगों की मिलीभगत से कल्याणकारी योजनाएं प्रभावित होती हैं तो उन कर्मचारियों और अधिकारियों को भी बेनकाब किया जाएगा। पत्रकारों द्वारा तथ्यपूर्ण रिपोर्टिंग के बाद विभिन्न राज्यों की सरकारों व केन्द्र सरकार से तमाम समस्याओं के समाधान के लिए गुजारिश की जाएगी। इसके बावजूद भी यदि समस्या के समाधान की तरफ कदम नहीं उठाए जाते तो 'एहरा' अपने एहरा एडवोकेट एसोसिएट्स के माध्यम से कोर्ट में केस दायर कर सकती है। 'एहरा' एक बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए आगे बढ़ रही है। आजादी मिलने के बाद काम तो बहुत हुए हैं। हमारी विकास की कहानी देखने और सुनने में बहुत अच्छी लगती है, पर अभी भी यह विकास बहुमुखी नहीं है। 'एहरा' इन सब क्षेत्रों पर भी सिलसिलेवार ढंग से काम करेगा। इस संबंध में **'एहरा'** के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एम. यू. दुआ का कहना है कि अब देश में काम का माहौल बन रहा है और हमारे कार्यकर्ता भी उत्साहित हैं, जनता भी बदलाव की उम्मीद में है और हम विश्वास से लबरेज हैं। ऐसे में हमें सफलता अवश्य मिलेगी।

'एहरा' के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ एम. यू. दुआ का मानना है कि विश्व में आर्थिक, राजनीतिक उथल–पुथल का दौर चल रहा है। डॉ. दुआ का कहना है कि 'एहरा' एक नया इतिहास रचने की राह पर है। आने वाले समय में भारत एक बार फिर विश्व का गुरू बनेगा और मानवता के पक्षधर भारत का नाम विश्व में सर्वोच्च होगा। आज जरूरत है राष्ट्रीय संकल्प की और यह सब नामुमकिन नहीं है। आज जरूरत है भारत मां की मिट्टी को आतंकित करने वाले असामाजिक तत्वों और बुरी नियत रखने वाले लोगों से बचाने की, जो मिट्टी को लहुलुहान करने में लगे हैं। जरूरत है उन अलगाववादियों के खिलाफ खड़े होने की जो भारत मां को टुकड़ों में विभाजित करने पर तुले हैं। जात–पात, भाषा, मजहब और क्षेत्रीय उन्माद फैला कर जो भारत की मिट्टी को शर्मशार किया है उन सबको आज जरूरत है सबक सिखाने की।

आज जरूरत है भारत मां की लाज और अस्मिता बचाने के लिए युवाओं, बुद्धिजीवियों और समाज के उन तमाम लोगों की जो

जारी....10 पर

राष्ट्र भावना अपने दिलों में रचाते हैं और राष्ट्र को अपना घर परिवार मानते हैं। कहते हैं कि राष्ट्र नहीं तो समाज नहीं। समाज नहीं तो मनुष्य नहीं फिर हम किस पंगत में बैठे हैं ? आओ 'एहरा' के संग आवाज दो इन्कलाब एक और। भेदभाव मिटाना है, मानवता को बचाना है। यही 'एहरा' का नारा है।

'एहरा' अपने स्थापना वर्ष से ही भ्रष्टाचार, कालेधन, व्यवस्था परिवर्तन, मानवीय मूल्यों की वकालत, एक राष्ट्रभाषा, शिक्षा का व्यवसायीकरण का विरोध, एक राष्ट्रीय पहचान एवं अन्य समस्याओं तथा सम्मान से जीने के अधिकार पर बल देता आ रहा है और इस पर कई गोष्ठियां, वर्कशॉप एवं जागरूकता अभियान करता आ रहा है।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि 'एहरा' बिना सरकारी दान–अनुदान के अब तक अपनी मंजिल को तय करता आया है और अपने स्वाभिमान को बचाकर रखा है। इन तमाम सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के बाद डॉ. दुआ ने विभिन्न ज्वलंत विषयों पर अपने प्रखर विचारों को पुस्तक के माध्यम से लोगों के सामने रखने का प्रयास किया। उनकी लिखी पहली पुस्तक **मानवाधिकार व सुशासन** में उन्होंने सुशासन पर जोर देते हुए कहा है कि सुशासन जनता का हक़ है। इस पुस्तक में मानव, मानवता व मानवाधिकार पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही मानवाधिकारों की प्रसांगिकता, सुशासन पर विशेष फोकस किया गया है। इस पुस्तक में मजदूरों, किसानों, विकलांगों, महिलाओं, शोषितों, वंचितों, दलितों, आदिवासियों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाल गया है। उनकी समस्याओं को उठाते हुए तमाम तरह के समाधान भी बतलाए गए हैं। इस पुस्तक को लोगों ने पसंद किया। इसी से प्रभावित होकर उन्होंने दूसरी पुस्तक भ्रष्टाचार और मानवाधिकार लिखी। इस पुस्तक में भ्रष्टाचार के कारणों, परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए उसके समाधान भी बतलाए गए हैं और आगामी कुछ वर्षों इसी तरह की दर्जनों पुस्तकें लिखने का डॉ. एम.यू.दुआ मन बना चुके हैं। उनका कहना है कि बैठने से, आराम करने से मन अशांत रहता है इसलिए व्यक्ति को मात्र छः घंटे सोना चाहिए बाकी समय में उसे सदैव जागृत रहना चाहिए और डॉ. दुआ विभिन्न स्थलों पर हुए अपने अनुभव तथा मानवाधिकारों एवं मानवता के लिए किए गए कार्यों के अपने अनुभव को पुस्तक के माध्यम से जन–जन तक पहुंचा रहे हैं। बगैर किसी सरकारी योगदान या उद्योगपतियों की सहायता से इस मिशन को आगे बढ़ाना एक सामान्य बात नहीं है। स्वावलंबन के आधार पर आज 'एहरा' प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर है। डॉ. एम. यू. दुआ ने आने वाले कुछ वर्षों के लिए 'एहरा' के द्वारा किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा तैयार कर ली है। इनका कहना है कि अब कुछ लोगों को पुरस्कृत कर देने, यात्रा के माध्यम से अनुभव ले लेने से ही काम नहीं चलने वाला है। यात्रा में अनुभवों को ध्यान में रखते हुए जमीनी स्तर पर काम करने की जरूरत है। इसके लिए वे एहरा के सदस्यों को भी उत्साहित करते रहते हैं। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की स्थिति को देखते हुए डॉ. एम. यू. दुआ कहते हैं कि आय से अधिक सम्पत्ति रखना एक गंभीर अपराध है और सरकारों द्वारा इसकी अनदेखी करना उससे भी बड़ा अपराध है। उनका कहना है कि अगर शुरू से ही इस मसले पर ध्यान दिया गया होता तो आज विदेशों में भारतीयों के अरबों रूपये काले धन के रूप में जमा न हुए होते। उनका कहना है कि विदेशों में जमा काले धन को वापस लाया जाना चाहिए। इसके साथ देश में भी विभिन्न रूपों में लोगों की काली कमाई जमा है। इनका कहना है कि ज्यादातर लोग अपनी आय को छुपाते हैं चाहे वे सरकारी कर्मचारी हो, छोटे–बड़ा व्यापारी हो, सेल्समैन हो, पत्रकार, समाजसेवी, हो, वकील हो, या बड़ा किसान हो। यदि हर व्यक्ति अपनी पूरी आय का सही ब्यौरा सरकार को दें तो सरकार को न तो कभी राजस्व की हानि होगी न कल्याणकारी योजनाओं के लिए धन की कमी होगी।

'एहरा' ने अपने 37 सूत्रीय मांग पत्र में यह भी मांग की थी कि भारत में भी स्विट्जरलैंड की तरह ऐसे बैंक की स्थापना होनी चाहिए जो लोगों के धन को सुरक्षित रखे तथा गोपनीयता बरत सके। ऐसा करने से काला धन बाहर नहीं जाएगा। उक्त धन भारत में ही रहेगा। इससे सरकार को काफी सहूलियत हो सकती है। 'एहरा' की इस मांग पर सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही 'एहरा' की मांगों में यह मांग भी शामिल है कि मानवाधिकार संगठनों से जुड़े लोगों को भी राज्य सभा मनोनीत करने की परिपाटी शुरू हो। मानवाधिकार के कार्यकर्ता तमाम तरह की समस्याओं और परेशानियों को झेलते हुए काम करते हैं। खासकर उन संगठनों को ज्यादा परेशानी होती है जिन्हें कोई सरकारी सहायता नहीं मिलती। 'एहरा' की इस मांग पर भी विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है। डॉ. एम.यू.दुआ का कहना है कि यदि उनकी मांगे नहीं मानी गईं तो वे इसके लिए अनशन का सहारा लेंगे और पूरे देश में आंदोलन को तेज करेंगे। 'एहरा' अपनी स्थापना के 28 साल बीतने पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में एक बड़े कार्यक्रम का आयोजन करने जा रही है। **ग्लोबल ह्यूमन राइट्स समिट एंड अवार्ड फंक्शन** जो 22 फरवरी 2015 को आयोजित किया जाएगा। इस दिन अंतर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोग इसमें भाग लेते हुए अपने विचारों को रखेंगे तथा मानवाधिकारों के संबंध में अपनी राय से अवगत कराएंगे। इसी अवसर पर 'एहरा' के अध्यक्ष डॉ. एम.यू.दुआ द्वारा हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी गई तीन पुस्तकों का लोकार्पण भी किया जाएगा।

जारी....11 पर

इस अवसर पर देश–विदेश के तमाम वरिष्ठ व जानी–मानी हस्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया जाएगा। पूरे देश और विदेश से आने वाले 'एहरा' के कार्यकर्ता व पदाधिकारी इस अवसर पर अपनी–अपनी इकाइयों द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी भी देंगे। अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।

इस कार्यक्रम की विस्तृत सूचना सभी सदस्यों को दी जाएगी। **'एहरा'** की बेवसाइट पर इसकी जानकारी उपलब्ध होगी। 'एहरा' के इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा। इसके लिए रजिस्ट्रेशन फार्म भी 'एहरा' की वेबसाइट पर उपलब्ध है। उस फार्म को भरकर तथा जो भी नियम और शर्तें है उसके अनुरूप वह इस कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

अभी हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री ने देश में सफाई की एक मुहिम शुरू की है। यह अत्यंत ही आवश्यक और सार्थक पहल है। 'एहरा' प्रधानमंत्री के इस कार्यक्रम का स्वागत करती है तथा प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए स्वच्छता अभियान को अपने कार्यकर्ताओं के माध्यम से देश के कोने–कोने में फैलाने जा रही है। 'एहरा' के इस कार्यक्रम में स्वच्छता अभियान पर भी 'एहरा' के कार्यकर्ताओं समेत देश–विदेश से आए तमाम लोगों से इस मिशन को सफल बनाने का अनुरोध करते हुए संकल्प लेने का अनुरोध किया जाएगा। इसके साथ ही देश व समाज के उत्थान के लिए सरकार के हर प्रयास का 'एहरा' पूरे मन व प्राण से समर्थन करेगी। इसी के साथ युवाओं में बढ़ती नशे की लत से गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। इससे परिवार, समाज व देश सभी को नुकसान होता है। इस बुराई को दूर करने के लिए प्रधानमंत्री ने भी लोगों से अपील की है। 'एहरा' भी युवाओं में बढ़ती नशे की लत को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करेगी। देश में काले धन को लेकर बड़े आंदोलन हुए और सरकार ने अपनी तरफ से सुप्रीम कोर्ट को विदेशी बैंकों में धन जमा करवाने वाले कुछ लोगों के नाम भी सौंपे हैं। मेरा मानना है कि यह कदम सार्थक है परन्तु यह अभी पूरी तरह सफल नहीं माना जा सकता। दुनिया भर के देशों में तमाम भारतीयों का धन जमा है। इसमें कई देशों के बैंक शामिल हैं। वर्तमान सूची संभवतः एक ही बैंक में दो देशों की शाखाओं में जमा कराए गए धन के बारे में है। इसके अलावा यूरोप के तमाम देशों व अमेरिका में भी भारतीयों के धन जमा होने की सूचना है। इस बारे में भी सरकार को अपने कदम को और तेज करना चाहिए। इस संबंध में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एम.यू. दुआ का कहना है कि सरकार के रुख को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि आने वाले दिनों में यह सरकार जन आकाक्षांओं पर खरा उतरेगी। डॉ. दुआ ने वर्तमान प्रधानमंत्री को भी अपनी मांगों की सूची सौंपी है और उनका कहना है कि हमें वर्तमान सरकार से काफी उम्मीदें हैं। ऐसे में इस पत्रिका के माध्यम से पुनः उन मांगों को मानने के लिए सरकार से अनुरोध करेंगे।

देश में कृषि क्षेत्र की स्थिति को सुधारने के लिए भी सरकार को काम करने की जरूरत है। 'एहरा' इन सब विषयों पर भी अपने इस कार्यक्रम में लोगों से अपने विचार रखने का मन बना चुकी है। देश के ज्वलंत विषयों पर बुद्धिजीवियों के विचार काफी महत्वपूर्ण होते हैं और बुद्धिजीवियों के विचार व्यक्त करने के बाद मीडिया और सरकार उस पर ज्यादा ध्यान देती है।

28 वर्ष पहले शुरू हुई 'एहरा' की यह यात्रा एक ऐसे पड़ाव पर आ पहुंची है जहां पर 'एहरा' का चेहरा और उसके कार्य दिखने लगे हैं परन्तु 'एहरा' की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। लोगों की उम्मीदें 'एहरा' से बढ़ चुकी हैं। ऐसी स्थिति में 'एहरा' लोगों के दुख–दर्द को दूर करने के लिए और भी गंभीर प्रयास करेगी। 'एहरा' का प्रयास तभी सफल हो सकता है जब इससे हर वर्ग के लोग जुड़ें। 'एहरा' के अध्यक्ष का कहना है कि ज्यादातर लोग हमारे मिशन से जुड़ें और हमारे विजन से परिचित हों। हमारा मिशन और विजन दोनों स्पष्ट है। जिस तरह से अर्जुन को सिर्फ चिड़िया की आंख दिखाई पड़ती थी और वे अपने गुरू के सबसे विश्वासपात्र और प्रिय शिष्य माने गए क्योंकि वे लक्ष्य को जानते थे और अपने उद्देश्यों को हासिल करने में उन्हें महारत हासिल थीं। 'एहरा' का लक्ष्य भी मानवता की सेवा करना है। हमें भी सिर्फ चिड़िया की आंख की तरह अपने कार्य दिखाई पड़ रहे हैं और निश्चित रूप से हम अपने कार्यों में सफल होंगे। यह हमारा विश्वास है। हमारे मार्ग में जितनी भी कठिनाई आईं उन सबका हमने डटकर सामना किया और हम निरंतर आगे बढ़ते रहे। 'एहरा' के अध्यक्ष डॉ. एम.यू.दुआ एक लक्ष्य को हासिल करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। डॉ. एम.यू. दुआ का कहना है कि महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ. अब्दुल कलाम आजाद जैसे नेताओं और विचारकों से प्रेरणा लेते हुए कोई भी व्यक्ति किसी भी लक्ष्य को हासिल कर सकता है।

'एहरा' के अध्यक्ष का मानना है कि मानवाधिकार की सुरक्षा के बिना किसी भी तरह की आजादी सच्ची आजादी नहीं है। 'एहरा' का कहना है कि आदमी गोरा हो, काला, हिन्दू हो, या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, वह कोई भी भाषा बोलने वाला हो, वह सिर्फ एक इंसान है इसलिए सभी व्यक्ति एक तरह के हैं और सभी के मानवाधिकार भी समान हैं और सभी मानवाधिकारों को प्राप्त करने के अधिकारी हैं। 'एहरा' इसी अभियान में शुरू से जुटी हुई है। हमें उम्मीद है कि कल सफलता हमारे कदम अवश्य चूमेगी।

– 'एहरा' डेस्क